हज़रत फातिमा ज़हरा (स०) की सीरत

मोहतरमा बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहेबा

बेअ्सत का पाँचवां साल था। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) बहुत सख़्त हालात में ज़िन्दगी बसर कर रहे थे इस्लाम एक कोने में था और मुसलमान थोड़े से थे और वह भी सख़्त हालात में।

शिर्क, बुतों की पूजा, जिहालत, ख़ुराफ़ात, आपसी लड़ाइयाँ, ज़ालिम की हुकूमत और अवाम की मज़लूमियत और लावारेसी की वजह से मक्के के माहौल में अंधकार था।

पैग़म्बरे अकरम (स0) आने वाले दौर के बारे में सोच रहे थे इन काले बादलों के पीछे एक रौशन ज़माना। वह ज़माना जो आम और ज़ाहिरी हालात की बुनियाद पर दूर बल्कि ग़ैरमुमकिन नज़र आ रहा था कि उसी साल पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की ज़िन्दगी में एक बड़ा वाक़ेआ सामने आया। सारे आलम की सैर के लिए मेराज की दावत दी गई और इस आयत ''लिनुरियहू मिन आयातिनल कुबरा'' की बुनियाद पर ख़ुदा की बड़ी निशानियों को आसमानों की बुलन्दियों पर अपनी नज़रों से देखा। वसीअ् रूह में और ज़्यादा गहराई पैदा हो गई जो अज़ीम पैग़ाम के लिए तैय्यार थीं।

मेराज की रात पैग़म्बरे इस्लाम जन्नत से गुज़र रहे थे। जिबरईल ने तूबा के पेड़ से एक फल पैग़म्बर (स0) को दिया। और जब पैग़म्बरे इस्लाम (स0) वापस तशरीफ़ लाए तो उस जन्नती मेवे से हज़रत फ़ातिमा ज़हरा के वजूद की शुरुआत हुई। और पैग़म्बरे इस्लाम जैसे अज़ीम बाप और जनाबे ख़दीजतुल कुबरा (स0) जैसी फ़िदा होने वाली माँ से 20 जमादिस्सानी को मासूमए कौनैन पैदा हुईं।

आलम यह था कि जब आपने ज़मीन पर क़दम रखा तो आपके मुबारक वजूद से ज़मीन रौशन हो गई। पूरब और पश्चिम का कोई हिस्सा ऐसा नहीं था जो आपके पाक वजूद से न चमका हो जिस घर में आप तशरीफ़ लाईं दस हूरें आपके साथ थीं। और हर एक के हाथ में थालियाँ और लोटे थे और लोटे आबे कौसर से भरे थे। इसके बाद वह औरत जो जनाबे ख़दीजा के पास थी उसने हज़रत सैय्यिदए आलम (स0) को लिया और आबे कौसर से नहलाया, सफेद लिबास आपको पहनाया। वह लिबास मिश्क वग़ैरा की ख़ुशबू से महक रहा था। इसके बाद देखा गया कि जनाब फ़ातिमा (स0) फरमा रही हैं:– ''मैं गवाही देती हूँ कि अल्लाह के अलावह कोई ख़ुदा नहीं और मेरे वालिदे बुज़ुर्गवार अल्लाह के रसूल, तमाम नबियों के सरदार हैं, मेरे शौहर तमाम औसिया के सरदार और मेरे फ़रज़न्द नस्लों के सरदार हैं''।

सैय्यिदए आलम की पाक ज़ात ने पैग़म्बरे अकरम (स0) को नस्ल के ख़त्म हो जाने का ताना देने वालों की उम्मीदों पर पानी फेर दिया। और सूरए कौसर की रौशनी में रसूल की औलाद, मासूम इमाम क़यामत तक के लिए भलाई और हज़रत फातिमा सलामुल्लाहि अलैहा फैय्याज़ी का चश्मा क़रार पाईं।

इस जन्नती औरत के 9 नाम हैं जिनमें से हर नाम दूसरे से ज़्यादा माने वाला है। 1–फातिमा, 2–सिद्दीक़ा, 3–ताहिरा, 4–मुबारका, 5–ज़किय्या, 6–राज़िया, 7–मरज़िय्या, 8–मुहद्दिसा, 9–ज़हरा। लेकिन हर नाम आपकी ख़ूबियों और बरकत वाले वजूद का तर्जुमान है।

इतना ही काफ़ी है कि इनके मशहूर नाम ''फ़ातिमा'' में इनके मानने वालों के लिए बड़ी भारी ख़ुशख़बरी छुपी हुई है। क्योंकि फातिमा (स0) ''फतम'' से निकला है जिसके माने हैं ''जुदा होना'' या ''दूध छुड़ाना'' और पैग़म्बरे अकरम (स0) की हदीस के हिसाब से, जो रसूल (स0) ने हज़रत अली (अ0) से इरशाद फरमाई जानते हो मेरी बेटी का नाम ''फ़ातिमा'' क्यों रखा गया है? अर्ज़ कियाः आप फरमाएं।

हुज़ूर (स0) ने फरमायाः इसलिए कि वह और इसके शिया, जहन्नम की आग से अलग कर दिये गऐ हैं। और यह भी फरमायाः ''मरियम अपने ज़माने की औरतों की सरदार थीं लेकिन मेरी बेटी फ़ातिमा (स0) पहले वालों और बाद वालों में सभी औरतों की सरदार हैं।''

इस बच्ची की पैदाइश ने हज़रत पैग़म्बरे अकरम (स0) को इतना ज़्यादा ख़ुश किया कि ख़ुदा के नबी ने ख़ुदा की बेपनाह तारीफ की। और उन लोगों की ज़बानें बन्द कर दीं जो रसूले अकरम (स0) को मक़्तूउन्नस्ल होने का ताना देते थे। चुनानचे ज़रूरी है कि दोनों जहाँ की शहज़ादी (स0) की सीरत पर एक नज़र डाल ली जाए।

लफ्ज़ सीरत ख़ुद एक ख़ामोश हक़ीक़त होती है इसलिए इससे दलील देने से पहले इसकी हालत पर नज़र ज़रूरी है क्योंकि हालत को जाने बग़ैर सीरत से दलील देना एक बेमाने काम होगा यानी जब तक सीरतों की हालत मालूम न हो जाए उस वक़्त तक उनके बारे में फैसला करना ग़ैरमुमकिन है। इस वक़्त ज़रूरत इस बात की है कि पर्दे के बारे में भी इस्लामी रवैय्या मालूम किया जाए ताकि उसकी रौशनी में सीरत को खंगाला जा सके। क़ुर्आन व सुन्नत के बहुत से बयानों से इस रवैय्ये की वज़ाहत करने के लिए इस वक़्त मासूमए आलम जनाब फ़ातिमा ज़हरा (स0) का ये जुमला नज़रों के सामने है जो आपने सरवरे काएनात के एक सवाल पर इरशाद फ़रमाया था। आपका सवाल यह था कि औरत के लिए सबसे अच्छी चीज़ क्या है?

हज़रत फ़ातिमा (स0) ने जवाब दिया कि ''न वह किसी नामहरम को देखे और न कोई नामहरम उसे देखे।''

और पैग़म्बरे गिरामी (स0) की यह रिवायत भी देखने लायक़ है कि आपने अपने सहाबियों से सवाल किया कि औरत की हक़ीक़त क्या है?

सहाबियों ने कहाः औरत नाम है हया का (यानी छुपाने वाली चीज़)।

फिर आपने पूछाः किस वक़्त औरत ख़ुदा से क़रीब हो सकती है?

सहाबियों ने कोई जवाब नहीं दिया। जैसे ही हज़रत ज़हरा ने इस मतलब को सुना अर्ज़ किया किः औरत को ख़ुदा से क़रीब होने की हालत उस वक़्त हो सकती है कि वह अपने को घर की कनीज़ समझे और घर से बाहर न जाए।

यह सुनकर हज़रत ने फरमायाः फातिमा (स0) मेरे बदन का टुक्ड़ा है।''

जिसका मतलब यह है कि पर्दा एक तरफ से छुपाने का नाम नहीं बल्कि इसमें दोनों

तरफ की शर्म और ग़ैरत दाख़िल है। पर्दा सिर्फ घर में बैठने का नाम नहीं है बल्कि घर से निकलने के बाद भी मर्दों की नज़र से बचने का नाम है और घर में रहकर भी नामहरम की नज़र से अपने आपको बचाए रखने का नाम है। औरत को क़ानूनी एतेबार से घर के अन्दर रहकर घर के कामों की निगरानी करनी चाहिए।

जैसा कि जनाब सिद्दीक़ा ताहिरा (स0) के घर के कामों के सिलसिले में इमाम सादिक़ (अ0) से रिवायत हैः रसूले ख़ुदा (स0) हज़रत ज़हरा (स0) के घर में दाख़िल हुए, जबकि आपकी बेटी ऊँट के ऊन का सख़्त लिबास पहने हुए थीं। एक हाथ से चक्की पीस रही थीं और दूसरे हाथ से अपने बच्चे को दूध पिला रही थीं। पैग़म्बर की आँखों में आँसू आ गए और फरमायाः बेटी! दुनिया की कड़वाहट को आख़िरत की मिठास के मुक़ाबले में बर्दाश्त कर, क्योंकि ख़ुदा ने मुझ पर ये नाज़िल किया है कि तेरा परवरदिगार इतना तुझे देगा कि तू ख़ुश हो जाएगा। और अगर ज़रूरत के तहत निकल भी जाए तो अपने को मर्दों की नज़र से बचाए रखना चाहिए।

यही वजह है कि इस्लाम ने मर्द को औरत पर हुकूमत का दर्जा इस माने में दिया है कि वह औरत को घर से बाहर न जाने दे। घर के बाहर की ज़रूरतों को औरत के मुक़ाबले मर्द ज़्यादा बेहतर जानता है। और अगर इन हालात के जानते हुए भी बाहर जाने की इजाज़त देता है तो इसका मतलब यह है कि उसकी शर्म व हया रुख़सत हो चुकी है और ज़ाहिर है कि जिसकी शर्म व हया रुख़सत हो जाए उसका दीन व मज़हब कहाँ रह जाता है।

मासूमए कौनैन ने अस्मा से यह शिकायत की कि मदीनें में जनाज़ा उठाने का ऐसा तरीक़ा है जिससे मुर्दे का क़दो क़ामत नज़र आता है। हज़रत फ़ातिमा ज़हरा की यह बेचैनी बताती है कि आप मरने के बाद भी अपने क़दो क़ामत को सामने नहीं आने देना चाहती थीं और जो मरने के बाद यह ना चाहती हो वह ज़िन्दगी में कैसे बर्दाश्त कर सकती है। शायद यही वजह थी कि मुबाहला में जब गईं तो आगे रसूल (स0) और पीछे अली (अ0) को कर दिया ताकि फ़ातिमा की क़द सामने न आने पाए और फ़ातिमा ज़हरा (स0) के पैरों के निशान पर किसी की नज़र न पड़ने पाए।

हक़ीक़त में आप वह पाकदामन औरत हैं जिसका पर्दा सारी ज़िन्दगी बाक़ी रहा कि बाप के साथ नाबीना सहाबी भी आ गया तो उसे घर में दाख़िल होने की इजाज़त न दी और मरने के बाद भी मैय्यत उठवाने के लिए एक पर्देदार ताबूत का इन्तिज़ाम फरमाया।

आप ऐसी इबादत करने वाली थीं कि जिसके सिलसिले में हसन बसरी का बयान है कि इस उम्मत में सिद्दीक़ा ताहिरा से ज़्यादा इबादत करने वाला कोई और न था। इतनी देर तक अल्लाह की इबादत में खड़ी रहती थीं कि आपके मुबारक पैरों में सूजन आ जाती थी।

ख़ुदावन्दे आलम उम्मते तौहीद व रिसालत और मसलके विलायत के पैरोकारों को इस ख़बर के हासिल करने की तौफ़ीक अता फ़रमाए और हमारे समाज को हर बुराई, आफ़त से बचाए।

''इलाही आमीन''

□□□